17 जनवरी 2021, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2021-23

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के प्रवचन
अरिहन्त चैनल पर
प्रात: 6:08 से 6:38 तक

Ptst Youtube पर
पुन: प्रसारण 2.30 से 3.00 तक
प्रात: 9 से 10 तक समयसार पर
दोपहर 3 से 4 तक प्रवचनसार पर

वर्ष : 43, अंक : 20
जनवरी (द्वितीय), 2021 (वीर नि.संवत्-2547)

संस्थापक सम्पादक : **अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल**
सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा**
सह-सम्पादक : **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**

आजीवन शुल्क : 251 रुपये
वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

सिद्धचक्र मंडल विधान सानन्द संपन्न

इन्दौर (म.प्र.) : यहाँ ढाईद्वीप जिनायतन में नववर्ष के उपलक्ष्य में दिनांक 25 दिस. 2020 से 1 जनवरी 2021 तक श्री सिद्धचक्र मंडल विधान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के वीडियो प्रवचन एवं अनेक विद्वानों की मंगल वाणी से हुआ।

इस अवसर पर अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा एकत्व-विभक्त आत्मा (रोला शतक) पर प्रवचन का लाभ मिला।

श्री सिद्धचक्र विधान के आमंत्रणकर्ता श्रीमती भारतीबेन विजयकुमारजी जैन परिवार हाथरस मुम्बई एवं मण्डल उद्घाटनकर्ता श्री सतीशजी, अर्चनाजी यशजी परिवार इन्दौर थे। मंगल कलश विराजमानकर्ता श्रीमती भारतीबेन-विजयकुमारजी जैन, श्रीमती अर्चना-सतीशजी, यशजी, श्रीमती सोनल मुकेशजी जैन, श्रीमती चारु अखिलजी जैन परिवार, श्रीमती चंद्रकांता-आनन्दजी पाटनी परिवार इन्दौर थे।

विधि-विधान के समस्त कार्य ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री देवलाली एवं डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के निर्देशन में पण्डित विवेकजी शास्त्री इन्दौर, पण्डित अशोकजी शास्त्री इन्दौर एवं पण्डित समकितजी शास्त्री खनियांधाना के सहयोग से संपन्न हुये।

इस अवसर पर ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित अभयकुमारजी

(शेष पृष्ठ 4 पर...)

ढाईद्वीप में गोष्ठी संपन्न

ढाईद्वीप जिनायतन में आयोजित सिद्धचक्र विधान के अवसर पर दिनांक 27 दिसम्बर को श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय में अध्ययन उदीयमान विद्वानों द्वारा '**सिद्धचक्र विधान : एक परिशीलन**' विषय पर गोष्ठी सानन्द संपन्न हुई।

गोष्ठी की अध्यक्षता डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर ने की।

इस अवसर पर **सिद्ध परमेष्ठी : विभिन्न परिभाषाओं में** विषय पर अरविन्द जैन खड़ैरी, **आगम के आलोक में : विधान का यथार्थ परिचय** विषय पर संदेश जैन दिल्ली, **विधानचूड़ामणि सिद्धचक्र विधान : क्या और कैसे** विषय पर संयम जैन खनियांधाना, **प्रथमानुयोग के परिप्रेक्ष्य में : अष्टाह्निका का स्वरूप एवं सिद्धचक्र से संबंध** विषय पर स्वस्ति सेठी जयपुर, **सिद्धचक्र विधान का कलापक्षीय सौंदर्य** विषय पर आप्तअनुशील जैन दमोह, **सिद्धचक्र विधान में सैद्धांतिक सौंदर्य** विषय पर संयम जैन दिल्ली, **विधान चूड़ामणि सिद्धचक्र विधान और ग्रंथाधिराज समयसार** विषय पर पवित्र जैन आगरा, **सिद्धचक्र विधान के संबंध में प्रचलित भ्रांतियों की जड़ एवं उससे मुक्ति** विषय पर अमन जैन आरोन ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

गोष्ठी का मंगलाचरण शिवराज स्वामी मानगांव ने एवं संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष से अर्पित जैन भगवां ने किया। आभार प्रदर्शन विवेकजी शास्त्री इन्दौर ने एवं संयोजन जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

नूतन वर्षाभिनन्दन संपन्न

तीर्थधाम ढाईद्वीप जिनायतन इन्दौर में आयोजित सिद्धचक्र महामंडल विधान के अवसर पर दिनांक 31 दिसम्बर को '**नूतन वर्षाभिनन्दन - श्री जिनेन्द्र के चरणों में सादर वन्दन**' नामक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें जिनेन्द्र भक्ति, कविता पाठ, अर्हम् टैलेन्ट आदि कार्यक्रम हुये, साथ ही डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का मार्मिक उद्बोधन भी प्राप्त हुआ। रात्रि 9.30 से 12.30 तक हुये इस कार्यक्रम में देश-विदेश के हजारों साधर्मियों ने भाग लिया।

इस अवसर पर जिनेन्द्र भक्ति पण्डित ऋषभजी छिन्दवाड़ा, पण्डित विवेकजी छिन्दवाड़ा, पण्डित विवेकजी इन्दौर, पण्डित समकितजी खनियांधाना द्वारा तथा कविता पाठ पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री आगरा, पण्डित संयमजी शास्त्री द्वारा किया गया। नव वर्ष के अवसर पर देश-विदेश के अनेक साधर्मियों ने अपने विचार एवं संकल्प व्यक्त किये।

कार्यक्रम का मंगलाचरण अचिन्त्यजी ग्वालियर एवं संचालन मोटिवेशनल स्पीकर युवा विद्वान पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर ने किया। आभार प्रदर्शन श्री अजितप्रसादजी जैन दिल्ली (अध्यक्ष-श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन शासन प्रभावना ट्रस्ट, इन्दौर) एवं श्रीमती सोनल मुकेशजी जैन इन्दौर ने किया। संपूर्ण कार्यक्रम में डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित बिपिनजी शास्त्री मुम्बई एवं पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर भी उपस्थित रहे।

(11) सम्पादकीय –

पण्डितप्रवर टोडरमलजी

– डॉ. संजीवकुमार गोधा

द्वितीय अध्याय का सार (संसार अवस्था का स्वरूप)

(गतांक से आगे...)

सत्ता व उदय रूप कर्मों की अवस्था –

कर्म परमाणुओं का आत्मप्रदेशों के साथ एकक्षेत्र अवगाहरूप रहना **सत्ता** है। इन सत्ता में पड़े हुए कर्मों में जीव के परिणाम बदलने पर अपकर्षण भी हो जाता है अर्थात् कर्म बंधे-बंधे ही घट जाता है। कभी उत्कर्षण भी हो जाता है अर्थात् कर्म बंधे-बंधे ही बढ भी जाते हैं। कभी संक्रमण भी हो जाता है अर्थात् वे कर्म दूसरी प्रकृतियों में बदल भी जाते हैं। इसप्रकार जीव के भावों का निमित्त पाकर पहले के बंधे हुए कर्मों की अवस्थाओं का बदलना होता रहता है।

बंधे हुए कर्मों के फल मिलने को **उदय** कहते हैं। प्रतिसमय अनंत कर्म परमाणु बंधते हैं तथा अनंत कर्म परमाणु ही उदय में आते हैं। अनेक समयों के बंधे हुए कर्म एक समय में उदय में आते हैं, एक समय के बंधे हुए कर्म अनेक समयों में उदय में आते हैं, इस तरह की परिस्थितियाँ बनती रहती हैं।

फल देने के बाद वे कर्म स्वयमेव छूट जाते हैं अर्थात् बंधे नहीं रहते। जब कर्म का उदय आ गया, फल मिल गया तो अब वे कर्म अपना कार्य पूरा हो जाने से आत्मा से छूटकर अलग हो जाते हैं।

कर्मों की सत्ता और उदय रूप अवस्था का संक्षिप्त वर्णन करने के बाद पण्डितजी ने लिखा कि 'इन सबका विशेष आगे कर्म अधिकार में लिखेंगे...।' वे क्या लिखने वाले थे, क्या था उनके चित्त में...! यह तो पण्डितजी के साथ ही चला गया। पर जितना उनके द्वारा यहाँ लिखा गया, उससे हम कुछ अनुमान लगा सकते हैं कि कर्मों के संदर्भ में उनका दृष्टिकोण किस प्रकार का था। उन्होंने अनेक स्थानों पर जीव और कर्म की स्वतंत्र योग्यता तथा उनके निमित्त-नैमित्तिक संबंध जैसी सूक्ष्म बातों को बताकर हमारे दिल-ओ-दिमाग से कर्मों के डर को निकाल दिया। उनकी पंक्तियों को पढकर ऐसा लगता है कि वे कर्म अधिकार में कर्म प्रकृतियों आदि की विस्तृत चर्चा करके भी वस्तु-स्वतंत्रता/स्वाधीनता को ही सिद्ध करते।

द्रव्यकर्म, भावकर्म और नोकर्म –

अब आगे तीन प्रकार के कर्मों की प्रवृत्ति बताते हैं – एक द्रव्यकर्म, एक भावकर्म, एक नोकर्म। द्रव्यकर्म को द्रव्यकर्म इसलिये कहते हैं; क्योंकि यह पुद्गल परमाणुरूपी **द्रव्य** का किया हुआ कार्य है। इनके होने में जीव के भाव निमित्त होते हैं, जो भाव निमित्त बनते हैं, उनका ही नाम भावकर्म है। जीव के परिणाम भावकर्म हैं और बंधने वाले परमाणु द्रव्यकर्म हैं।

यह जीव द्रव्यकर्म के उदय के निमित्त से तीव्र उदय आने पर तीव्र कषाय करता है, भाव तीव्र होते हैं तो बंधन भी तीव्र होता है। नवीन बंधन तीव्र हुआ तो उदय भी उसी प्रकार तीव्र ही आयेगा। इसप्रकार द्रव्यकर्म से भावकर्म और भावकर्म से द्रव्यकर्म की परिस्थितियाँ बनती रहती है।

नोकर्म को समझाते हुए पण्डित टोडरमलजी ने कहा कि नामकर्म के उदय से शरीर की अवस्था होती है, वो नोकर्म है। इससे शरीर-वाणी, द्रव्यमन, द्रव्य इन्द्रियाँ, श्वासोच्छवास का संबंध पाया जाता है – ये सब पुद्गल के पिण्ड शरीर रूप हैं।

इस जीव के जन्म से लेकर जितनी आयु है, उतने काल पर्यन्त शरीर का संबंध पाया जाता है, जब तक आयु बनी रहती है, तब तक शरीर का संबंध बना रहता है। आयु पूरी हो जाती है तब शरीर छूट जाता है – ऐसी व्यवस्था बनती रहती है। नये-नये शरीरों का मिलना और बिछुड़ना होता रहता है। इसमें शरीर प्रमाण आत्मा के प्रदेशों की संकोच विस्तारूप अवस्थाएं होती रहती हैं। समुद्घात अवस्था हो तो आत्मा के प्रदेश शरीर से बाहर भी निकल जाते हैं। इसमें यहाँ पण्डितजी विशेष बात कहना चाहते हैं कि इन शरीर की अवस्थाओं के अनुसार कभी तो जीव प्रवर्तता है, कभी जीव की इच्छा के अनुसार शरीर प्रवर्तता है, ऐसा परस्पर में देखा जाता है। कभी ऐसा भी होता है कि जीव अन्यथा प्रवर्तता है और शरीर अन्यथारूप प्रवर्तता है – इसप्रकार नोकर्म की प्रवृत्ति जानना।

नित्यनिगोद एवं इतरनिगोद –

जीव ने अनंतकाल निगोद दशा में बिताया है। जिस जीव ने निगोद दशा के अतिरिक्त अन्य दशा देखी ही नहीं, अनादिकाल से आज तक निगोद के अतिरिक्त दूसरी पर्याय प्राप्त ही नहीं की, निगोद अवस्था से मरकर पुन: निगोद, फिर निगोद – इसप्रकार उसका अनादिकाल से सिर्फ निगोद पर्याय में ही रहना **नित्यनिगोद** है। वे जीव लगातार जन्म-मरण, जन्म-मरण करते रहते हैं, वहाँ से निकलकर जब वे दूसरी अन्य पर्यायों को धारण करते हैं और

पुन: जब निगोद में पहुंचते हैं, तो उसे **इतरनिगोद** कहते हैं। नित्यनिगोद से छ: महिने आठ समय में 608 जीव निकलते हैं, वहाँ से पृथ्वी, जल आदि स्थावर दशाओं में परिभ्रमण करते हुए कोई दो इन्द्रिय, तीन इन्द्रिय, चार इन्द्रिय हो जाते हैं, कभी पंचेन्द्रिय भी होकर नरक, तिर्यंच, मनुष्य, देव अवस्थाओं में परिभ्रमण करते हुए पुन: निगोद में चले जाते हैं, इसी का नाम इतरनिगोद है।

अब आगे बहुत गम्भीर और विचारणीय बात कहते हैं। इस जीव को त्रस पर्याय की प्राप्ति साधिक दो हजार सागर के लिये होती है। विचार करना...नित्यनिगोद में तो हमने अनंतकाल बिताया, वहाँ से सद्भाग्यवश बाहर निकल गये। अब हम दुबारा नित्यनिगोद में तो कभी नहीं जायेंगे, परन्तु यदि दुबारा निगोद अवस्था में चले गये तो उसका उत्कृष्ट काल ढाई पुद्गल परावर्तन बताया गया है। पुद्गल परावर्तन के काल को पण्डितजी ने इसी ग्रंथ में आगे पेज नं. 64 पर पहली लाइन में बताया है। वहाँ लिखा है कि पुद्गल परावर्तन का काल इतना बड़ा काल है कि जिसके अनंतवें भाग में अनंत सागर बीत जाते हैं। हमें इन शब्दों का कुछ भावभासन नहीं होता। अनंत सागर...अनंत सागर...अनंत सागर...इसप्रकार अनंत सागर अनंत बार पूरे हों – इतना काल है एक पुद्गल परावर्तन का।

एक बार इतरनिगोद में चले गये तो वहाँ से निकलकर अन्य स्थावर पर्यायों में आने में अधिकतम ढाई पुद्गल परावर्तन का काल लग सकता है। इतरनिगोद से निकलकर पृथ्वीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक और प्रत्येक वनस्पतिकायिक में ही परिभ्रमण करता रहे तो वहाँ असंख्यात कल्पकाल उत्कृष्ट समय बताया गया है। इतना काल बिताकर पृथ्वी जलादि पर्यायों से कदाचित् महादुर्भाग्यवश दुबारा इतरनिगोद में चला जाये और वहाँ फिर दो–ढाई पुद्गल परावर्तन रहे, फिर वहाँ से निकलकर पृथ्वी, जलादि में... फिर इतर निगोद में...फिर पृथ्वी जलादि में...इसप्रकार परिभ्रमण करते हुए असंख्यात पुद्गल परावर्तन काल भी एकेन्द्रिय पर्याय में ही बीत सकता है।

विचार करें...! त्रस पर्याय की प्राप्ति करना कितना दुर्लभ है। पण्डितजी लिखते हैं – 'त्रस पर्याय प्राप्त करना काकतालीयन्यायवत् जानना।' इसतरह यहाँ कर्मबंधरूपी निदान की चर्चा संपन्न हुई।

अपना नाम एवं पता सहित सही जवाब सादे कागज पर लिखकर वाट्सअप पर ही भेजें, भेजने की अंतिम तिथि 10 फरवरी 2021 है। प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार के अतिरिक्त 5 सांत्वना पुरस्कार भी दिये जायेंगे।

वाट्सअप पर भेजने हेतु –9660668506 (पीयूष कुमार जैन)

पं. टोडरमलजी के 300वें जन्मजयंती वर्ष के अवसर पर प्रस्तुत है – ज्ञानपहेली

मोक्षमार्गप्रकाशक – अध्याय–7

(उभयाभासी एवं सम्यक्त्व सन्मुख मिथ्यादृष्टि)

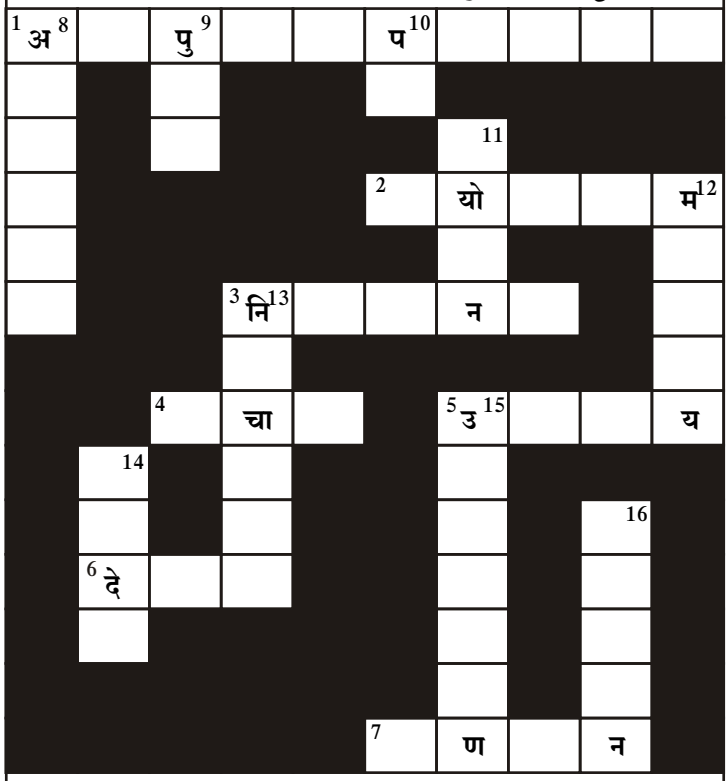

बाएं से दाएं –

1. सादि मिथ्यादृष्टि का उत्कृष्ट काल संसार में रहने का (10)
2. पाँच लब्धियों में से प्रथम (5)
3. एक ही द्रव्य के भाव को उस स्वरूप ही निरूपण करना है (5)
4. तत्त्व ..... वाला ही सम्यक्त्व का अधिकारी है (3)
5. निश्चय और व्यवहार दोनों को ..... मानना भी भ्रम है (4)
6. जिनदेव के उपदिष्ट तत्त्व का धारण होना है (3)
7. मिथ्या सम्यक् श्रद्धानरूप तारतम्यता का निश्चय करने के लिये है (4)

ऊपर से नीचे –

8. जिसमें पहले और पिछले समयों के परिणाम समान न हो (6)
9. जीवादि तत्त्वों को जानने में उपकारियों में से एक (3)
10. अज्ञानपूर्वक आचरण की निवृत्ति के अर्थ सम्यक् ..... है (2)
11. प्रवृत्ति में नयों का ..... है ही नहीं। (4)
12. मोह का मन्द उदय आने पर जिस रूप परिणाम होते हैं (5)
13. व्रतादि को छोड़कर हिंसादिरूप प्रवर्तना कैसा है? (6)
14. औरों को रुचिवान देखें तो कुछ..... देकर उनका भी भला करे (4)
15. अन्त:करण करने के पश्चात् क्या होता है (7)
16. तत्त्वविचार का फल है (5)

प्रस्तुति – आत्मअनुशील शास्त्री, दमोह

शोक समाचार

(1) कोलकाता निवासी श्रीमती शोभाजी जैन (बजाज) धर्मपत्नी श्री अशोकजी जैन (बजाज) का दिनांक 29 दिसम्बर को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी थीं, कोलकाता मुमुक्षु मण्डल की प्रत्येक गतिविधि में आपका सक्रिय योगदान था, पूरे परिवार में जैनधर्म के संस्कार आपकी ही प्रेरणा से हुये। अन्त समय तक उन्होंने धर्म आराधना नहीं छोड़ी।

(2) एलोरा (महा.) निवासी श्री पन्नालालजी गंगवाल का दिनांक 25 दिसम्बर को 92 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी थे, एलोरा गुरुकुल में सचिव पद पर कार्यरत रहकर तन–मन–धन से सहयोग किया तथा अनेक छात्रों को टोडरमल महाविद्यालय में अध्ययन हेतु प्रेरित किया।

(3) अशोकनगर (म.प्र.) निवासी श्री राजेन्द्रजी मानोरिया का शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत स्वाध्याय प्रेमी, सरल हृदय, मृदुभाषी, दानवीर, धर्मपरायण व समाजसेवी श्रावक थे।

(4) जयपुर (राज.) निवासी श्री अशोककुमारजी गंगवाल का दिनांक 29 दिसम्बर को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। ज्ञातव्य है कि आप टोडरमल स्मारक के अनन्य सहयोगी श्री महेन्द्रजी गंगवाल के लघु भ्राता थे।

(5) बड़ामलहरा (म.प्र.) निवासी श्रीमती कुसुमलताजी फौजदार धर्मपत्नी स्व. डॉ. शीतलप्रसादजी फौजदार का दिनांक 1 जनवरी 2021 को समाधिपूर्वक देहावसान हो गया।

(6) बेलगाम (कर्नाटक) निवासी श्री अण्णाराव कुंदप्पाजी का दिनांक 21 दिसम्बर को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपने आचार्य कुन्दकुन्द की तपो व समाधि स्थली गुरुक्षेत्र कुंदाद्री बेट के विकास व संवर्धन में बहुत योगदान दिया है।

(7) मौ (म.प्र.) निवासी श्री राजमलजी प्रज्ञा चक्षु का दिनांक 5 जनवरी को 89 वर्ष की आयु में समाधिपूर्वक देहावसान हो गया। आप जन्म से नेत्रहीन होने पर भी स्वाध्याय की रुचि रखते थे, गुरुदेवश्री कानजीस्वामी और ब्र. रवीन्द्रजी के प्रवचनों का लाभ लेते रहते थे। आपने नाटक समयसार, छहढाला आदि अनेक ग्रंथ कंठस्थ कर रखे थे। **– ब्र. सत्येन्द्रजी**

(8) श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के प्रथम बैच के स्नातक ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री देवलाली की बड़ी बहन **खनियांधाना (म.प्र.) निवासी श्रीमती कस्तूरीदेवी जैन** धर्मपत्नी स्व. श्री चम्पालालजी जैन का दिनांक 7 जनवरी को पंचपरमेष्ठी का स्मरण करते हुए शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में संस्था हेतु 2200/– रुपये प्राप्त हुए।

(9) रतलाम (म.प्र.) निवासी श्री कांतिलालजी बड़जात्या पुत्र श्री झमकलालजी बड़जात्या का दिनांक 7 अक्टूबर को आकस्मिक देहावसान

हो गया। आपके ही परिवार के **श्री प्रकाशचंदजी बड़जात्या** का दिनांक 28 सितम्बर को आकस्मिक देहावसान हो गया। आपका परिवार गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समय से ही टोडरमल स्मारक की प्रत्येक गतिविधि से जुड़ा हुआ है। आपके परिवार द्वारा रतलाम व आसपास के क्षेत्रों में मुमुक्षु समाज की गतिविधियाँ संचालित की जाती रही हैं। आपकी स्मृति में संस्था हेतु 3200/– रुपये प्राप्त हुये।

(10) जबलपुर (म.प्र.) निवासी श्री सुनीलजी जैन का दिनांक 9 जनवरी 2021 को 55 वर्ष की आयु में आकस्मिक देहावसान हो गया। ज्ञातव्य है कि आप टोडरमल महाविद्यालय के शास्त्री तृतीय वर्ष के विद्यार्थी आयुष जैन के पिताजी थे।

(11) आरोन (म.प्र.) निवासी श्री मिन्टूलालजी जैन का दिनांक 3 जनवरी को 85 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। ज्ञातव्य है कि आप टोडरमल महाविद्यालय के शास्त्री तृतीयवर्ष के विद्यार्थी अमन जैन के दादाजी थे। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक हेतु 1100/– रुपये प्राप्त हुये।

(12) कोलकाता निवासी श्री सौभागमलजी पाटनी पुत्र स्व. श्री मोहनलालजी पाटनी का दिनांक 6 जनवरी को समताभावपूर्वक देहावसान हो गया।

(13) महलका (उ.प्र.) निवासी श्री चंद्रभूषणजी जैन का दिनांक 25 नवम्बर को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी थे, यथासंभव जयपुर शिविरों में पधारकर तत्त्वज्ञान का लाभ लेते थे।

दिवंगत आत्माएं चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हों – यही मंगल भावना है।

(पृष्ठ 1 का शेष...)

शास्त्री देवलाली, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जैन जबलपुर, पण्डित शैलेषभाई तलोद, पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित राकेशजी शास्त्री लोनी दिल्ली आदि विद्वानों के प्रवचनों का लाभ मिला।

विधान में पण्डित राकेशजी शास्त्री नागपुर, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित सुनीलजी जैनापुरे राजकोट, पण्डित संजयजी शास्त्री जेवर एवं पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर का समागम प्राप्त हुआ।

संपूर्ण कार्यक्रम तीर्थधाम ढाईद्वीप जिनायतन के यूट्यूब एवं ज़ूम एप पर प्रसारित हुआ, जिसका सैंकड़ों साधर्मियों ने लाभ लिया। कार्यक्रम में पण्डित सुदीपजी शास्त्री, पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री जयपुर, पण्डित आकाशजी शास्त्री हलाज, पण्डित आकाशजी शास्त्री अमायन, श्री प्रेमजी जैन इन्दौर, रोशनी जैन औरंगाबाद आदि का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।

संपूर्ण आयोजन पण्डित बिपिनजी शास्त्री मुम्बई एवं पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल के निर्देशन में संपन्न हुआ।

श्री कुन्दकुन्द–कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, विले पारले, मुम्बई द्वारा
पूज्य गुरुदेवश्री कानजी स्वामी की साधना भूमि तीर्थधाम सोनगढ़ में संचालित

श्री कुन्दकुन्द–कहान दिगम्बर जैन विद्यार्थी गृह

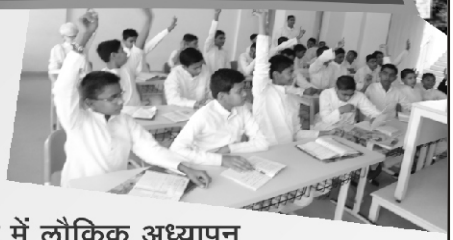

विद्यार्थी गृह की विशेषतायें

- गुजरात के श्रेष्ठ विद्यालयों में से एक श्री महावीर चारित्र कल्याण रत्न आश्रम में लौकिक अध्यापन
- पूज्य गुरुदेवश्री की आध्यात्मिक स्थली में अध्ययन का अवसर
- छठवीं से दसवीं तक की अध्यापन सुविधा
- लौकिक अध्ययन के साथ जिनधर्म के दृढ़ संस्कार
- समय–समय पर विशिष्ट विद्वानों का समागम
- सर्वसुविधा युक्त विशाल संकुल
- शारीरिक स्वास्थ्य पर पूर्ण ध्यान
- सभी सुविधायें पूर्णतः निःशुल्क
- लगभग सभी खेलों की सुविधा
- धार्मिक विषयों का श्रेष्ठ विद्वानों द्वारा अध्यापन
- वर्ष में दो बार शैक्षणिक तीर्थ यात्रा
- विशाल पुस्तकालय की सुविधा
- कठिन विषयों की विशेष कक्षायें
- साप्ताहिक गोष्ठियों एवं प्रतियोगिताओं के माध्यम से व्यक्तित्व विकास
- छठवीं कक्षा में प्रवेश

प्रवेश प्रक्रिया प्रारंभ

प्रवेश फार्म जमा करने की अंतिम तिथि 15 मार्च 2021

संपर्क

श्री कहान शिशु विहार, राजकोट रोड, सोनगढ़, जि.भावनगर, सौराष्ट्र गुजरात

फोन : 02846-244510, सोनू शास्त्री–9785643277, आतमप्रकाश शास्त्री–7405439519,
विराग शास्त्री–9300642434, अनेकांत शास्त्री – 9898192106, प्रियम शास्त्री – 9887986898
आप प्रवेश फार्म हमारी वेबसाइट www.kahanshishuvihar.org से भी डाउनलोड कर सकते हैं ।
E-mail : kahanshishuvihar@gmail.com

क्रमनियमितपर्याय

3

-डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

यदि होना है निश्चिन्त पूर्ण तो क्रमनियमित पर्यायों को।
आदिकाल से नंतकाल तक नियमित ही जानो-मानों।
परिवर्तन करने के भार से अपने को नित मुक्त रखो।
अर अपने उपयोग योग को अपने में संयुक्त रखो।। ६३।।

सहज सरल जीवनधारा को सहज सरल ही रहने दो।
अमृतमय जीवन सरिता को सहज तरल ही बहने दो।।
लहरें उठें सहज उठने दो तरल तरंगित रहने दो।
जितना उछले यह ज्ञानोदधि उतना उसे उछलने दो।। ६४।।

उसे नियंत्रित करने का ना यत्न करो न सोचो ही।
कुछ विकल्प मत करो बन्धुवर उसको खूब उछलने दो।।
अरे उछलकर कहाँ जायेगा अपनी सीमा के बाहर।
अपनी सीमा में सीमित वह सचमुच ही सीमन्धर है।। ६५।।

सभी बंधे हैं अपनी-अपनी क्रमनियमित पर्यायों में।
एक-एक पर्याय बंधी है अपने क्षण अपने क्रम में।।
एक समय पहले या पीछे कोई नहीं कर सकता है।
यह अज्ञानी जगत व्यर्थ में ही तो स्वयं उलझता है।। ६६।।

अरे आज तक क्या कर पाया और अभी क्या कर लोगे?
एक बार तुम सोचो तो क्या किया और क्या कर लोगे?
अबतक असैनि पर्यायों में ही काल अनन्त बिताया है।
और भावि में सिद्धदशा में भी तो कुछ नहीं करना है।। ६७।।

थोड़ा सा यह काल मिला है इसमें क्यों विकल्प करते?
क्रमनियमितता पर्यायों की क्यों स्वीकार नहीं करते?।।
यदि होनहार होगी हे भाई! काल निकट आया होगा।
इस परम सत्य की स्वीकृति का सम्यक्पुरुषार्थ जगा होगा।।६८।।

सम्यक् निमित्त तो हाजिर ही है सुनने का अवसर आया।
हर कीमत पर इसे समझने का सद्भाव तुम्हें आया।।
लगता है सद्भाग्य तुम्हारा अब आने ही वाला है।
अब तुमको भी परमसत्य यह स्वीकृत होनेवाला है।। ६९।।

हैं प्रश्न तुम्हारे सहज सरल जिज्ञासा प्रस्तुत करते हैं।
तत्त्वज्ञों में समझाने का भाव जागृत करते हैं।
विनयपूर्वक सच्चे दिल से कान लगाकर सुनते हों।
अर संबंधित विषय वस्तु का चिन्तन करते रहते हो।। ७०।।

वृत्ति और प्रवृत्ति तुम्हारी संगति करने लायक है।
साधर्मी वात्सल्य तुम्हारा अपनाने के लायक है।।
रहन-सहन अर खानपान भी सात्त्विक और अहिंसक है।
भव्यों जैसा भव्य आचरण भवि सन्मार्ग प्रदर्शक है।। ७१।।

इससे लगता है अतिशीघ्र तुम तत्त्व समझने वाले हो।
क्रमनियमित पर्यायों का भी मर्म समझने वाले हो।।
इस महासत्य को स्वीकृत कर सम्यकपथ पाने वाले हो।
अधिक कहें क्या कुछ भव में मुक्ति में जाने वाले हो।। ७२।।

जिनका संसार शेष होता उनको यह बात अखरती है।
कितना भी समझाव उन्हें उनको यह बात न जँचती है।।
उनसे कुछ बात करो भाई तो गला पकड़ने लगते हैं।
अर बात-बात पर आपस में वे स्वयं झगड़ने लगते हैं।। ७३।।

उनसे कुछ बातें करने से या उनकी बातें सुनने से।
कुछ लाभ न होने वाला है इस सबमें व्यर्थ उलझने से।।
हमको तो निर्णय करना है आगे कब क्या होगा कैसे?
जिनवाणी में जो बतलाया उसकी तह में जाना कैसे?।।७४।।

आगे का सब कुछ निश्चित है केवलज्ञानी ने जाना है।
यह बात एकदम परम सत्य हमने भी तो यह माना है।।
इस परम सत्य को स्वीकृत कर बस सहज जानते रहना है।
यह सहज भाव ही जीवन है जिनवाणी का यह कहना है।।७५।।

'भावी पर्यायें भी नियमित' हम ऐसा माने नहीं किन्तु।
निज आतम का ही ज्ञान-ध्यान एवं पूरा श्रद्धान करें।।
देव-शास्त्र-गुरु की भक्ति अर जिनवाणी का श्रवण-मनन।
सदाचारमय जीवन एवं खान-पान का ध्यान रखें।। ७६।।

इसमें क्या है कमी अरे हम भी आतम के साधक हैं।
मुक्तिमार्ग के पथिक और हम आतम के आराधक हैं।।
शक्ति के अनुसार व्रतादिक पालें एवं दान करें।
उपवासादिक करें और आखिर मुक्ति का वरण करें।। ७७।।

यह सब तो है ठीक किन्तु क्रमनियमितपर्यायों को।
यदि मानोगे नहीं धर्म का मर्म समझ न पावोगे।।
ढोते रहना अरे निरन्तर कर्त्तापन के बोझे को।
प्राप्त नहीं कर पावोगे तुम आतम के सच्चे सुख को।। ७८।।

कर सकते कुछ नहीं किन्तु करने का बोझा माथे पर।
रखकर विकल्प करते रहना रोते रहना तुम जीवनभर।।
सदाचारमय जीवन से तुम स्वर्ग संपदा पा लोगे।
पर कर्त्तापन का बोझ उतारे बिना मुक्ति ना पावोगे।। ७९।।

लगता है भाई अभी किनारा भवसागर का पास नहीं।
भवसागर के नंत दुखों का तुम्हें रंच आभास नहीं।।
एक बार गंभीर भाव से सोचो और विचारो तो।
क्रमनियमित पर्यायों का यह परमसत्य स्वीकारो तो।। ८०।।

(क्रमशः)

22वाँ JAANA शिविर संपन्न

जैन अध्यात्म अकेडमी ऑफ नॉर्थ अमेरिका (JAANA) द्वारा प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी दिनांक 8 से 10 जनवरी 2021 तक अमेरिका और कनाडा के विविध प्रांतों में फैले हुए आत्मार्थी मुमुक्षुओं के लिये 22वाँ वार्षिक शिविर ऑनलाइन लगाया गया।

शिविर में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर, पण्डित विपिनजी शास्त्री मुम्बई एवं पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर द्वारा प्रतिदिन प्रवचनों का लाभ मिला। प्रातः पूजन विधान एवं दोपहर में बालकों द्वारा विशेष प्रस्तुति की गई।

सम्पूर्ण शिविर JAANA के डायरेक्टर श्री अतुलभाई-चारु खारा, डॉ. संजीव गोधा, श्री पौरांग-निकेता पारेख, श्रीमती रोशनी सेठी और श्री अनंत-ऋचा पाटनी के निर्देशन में हुआ। श्री क्षितिज-शीतल शाह का विशेष सहयोग रहा। शिविर में यूट्यूब एवं ज़ूम एप के माध्यम से लगभग 1000 से अधिक लोगों ने लाभ लिया।

अनुकरणीय योगदान

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के स्नातक चिन्मयजी शास्त्री पिड़ावा के पिताजी पण्डित धनसिंहजी ज्ञायक ने महाविद्यालय में एक छात्र के आजीवन अध्ययन हेतु स्वप्रेरणा से 5 लाख रुपये महाविद्यालय ध्रुवफण्ड में प्रदान किये हैं।

ज्ञातव्य है कि कुछ वर्ष पूर्व रवि शास्त्री पिड़ावा के पिताजी श्री कैलाशचंदजी ने भी सेवानिवृत्ति के अवसर पर एक विद्यार्थी के 5 वर्ष तक अध्ययन हेतु 1 लाख 51 हजार की राशि प्रदान की थी।

इस अनुकरणीय योगदान हेतु हार्दिक अनुमोदना!

जिनागमसार श्रोता गोष्ठी संपन्न

आचार्य अकलंक जैन न्याय महाविद्यालय बांसवाड़ा के तत्त्वावधान में दिनांक 22 से 30 दिस.तक जिनागमसार श्रोता गोष्ठी का आयोजन हुआ।

गोष्ठी के अन्तर्गत डॉ. प्रवीणजी शास्त्री बांसवाड़ा द्वारा ऑनलाइन चलायी जा रही कक्षाओं के श्रोताओं द्वारा ही द्रव्यसंग्रह, गोम्मटसार, रत्नकरण्डश्रावकाचार, भक्ष्य-अभक्ष्य, तत्त्वार्थसूत्र आदि विषयों पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया गया। गोष्ठी का मंगलाचरण, संयोजन, संचालन आदि सभी कार्य श्रोताओं द्वारा ही किया गया; प्रतिदिन दोनों समय आयोजित कुल 18 गोष्ठियों में 190 साधर्मियों ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

प्रथम दिन उद्घाटन के अवसर पर पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर एवं श्री महीपालजी ज्ञायक बांसवाड़ा द्वारा विशेष उद्बोधन प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त अध्यक्ष, विशिष्ट विद्वान के रूप में डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य', पण्डित विक्रांतजी सोलापुर, पण्डित अजितजी शास्त्री अलवर, पण्डित संजयजी शास्त्री परतापुर, पण्डित खेमचंदजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित संजयजी सेठी जयपुर, पण्डित सोनूजी शास्त्री अहमदाबाद, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित अभयजी शास्त्री खैरागढ, पण्डित आकाशजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित रितेशजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित निलयजी शास्त्री आगरा, पण्डित अशोकजी शास्त्री इन्दौर, पण्डित मनीषजी शास्त्री जयपुर, पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री आगरा, पण्डित जितेन्द्रजी राठी पुणे, पण्डित विक्रांतजी पाटनी झालरापाटन, पण्डित अंकुरजी शास्त्री भोपाल, पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री जयपुर, पण्डित गोमटेशजी शास्त्री कोटा, ब्र. आरती दीदी छिन्दवाड़ा, डॉ. ज्योति सेठी जयपुर, डॉ. मनीषा जैन जयपुर आदि का समागम प्राप्त हुआ।

गोष्ठी का निर्देशन डॉ. प्रवीणजी शास्त्री बांसवाड़ा ने किया।

हार्दिक बधाई!

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय जयपुर के स्नातक श्री आशुजी शास्त्री झालरापाटन का चयन राजस्थान राज्य अध्यापक भर्ती (रीट, संस्कृत विषय लेवल-2 शिक्षक) में हुआ है।

टोडरमल महाविद्यालय परिवार एवं जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई!

मुक्त विद्यापीठ की सूचना

श्री टोडरमल जैन मुक्त विद्यापीठ के जनवरी सेमेस्टर के पेपर भेजे जा चुके हैं, यदि आपको प्राप्त नहीं हुए हों तो आप वाट्सअप या ईमेल से भी मंगा सकते हैं। वाट्सअप पर पेपर प्राप्त करने हेतु 9785645793 पर संपर्क करें या **shastriexams@gmail.com** पर ईमेल करके मंगा सकते हैं।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com
ये सभी प्रवचन सामग्री अब vitragvani एप पर भी उपलब्ध है।

आध्यात्मिक विद्वत् संगोष्ठी संपन्न

नागपुर (महा.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन स्वाध्याय मण्डल ट्रस्ट के तत्त्वावधान में नेहरू पुतला स्थित श्री महावीर दिगम्बर जैन मन्दिर, एम्प्रेस सिटि स्थित श्री महावीर दिगम्बर जैन मन्दिर तथा श्री महावीर विद्या निकेतन के वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में तीर्थधाम ज्ञानायतन द्वारा अर्हद्-वार्ता के अन्तर्गत आयोजित आध्यात्मिक विद्वत् संगोष्ठी दिनांक 6 जनवरी से 10 जनवरी, 2021 तक ऑनलाइन सम्पन्न हुई।

महोत्सव में देश-विदेश में ख्यातिप्राप्त शताधिक विद्वानों ने जिनागम में वर्णित द्रव्य-गुण-पर्याय विषय पर आधारित विश्व-व्यवस्था, द्रव्य-गुण-पर्याय का स्वरूप आदि अनेक विषयों पर चर्चा की।

यह संगोष्ठी डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर के निर्देशन में संचालित हुई; उन्होंने इसी विषय पर अपने शोध-प्रबंध तथा अनेक ग्रंथों के आधार से अत्यंत मार्मिक विषयों पर चर्चा के लिए वक्ताओं को आमन्त्रित किया; साथ ही चर्चा को दिशा देने हेतु अनेक विद्वानों के साथ प्रश्नोत्तर करते हुए विषय को नए आयाम प्रदान किए।

तेरह सत्रों में विभाजित इस गोष्ठी में विविध विषयों पर दिन में तीन बार चर्चा हुई। इसके प्रत्येक सत्र में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का मंगल सान्निध्य तथा समय-समय पर मंगल उद्बोधन प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित प्रदीपजी झाँझरी उज्जैन, डॉ. वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली, डॉ. अरुण शास्त्री जयपुर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ, पण्डित जे. पी. दोशी, पण्डित प्रकाशजी छाबड़ा इन्दौर आदि अनेक विद्वानों ने विशेषज्ञ के रूप में द्रव्य-गुण-पर्याय के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला।

इस अवसर पर श्री अजित जैन बड़ौदा एवं मंत्री श्री अशोकजी जैन ने निर्माणाधीन संकुल (तीर्थधाम ज्ञानायतन) से विस्तृत परिचय कराया।

गोष्ठी में देश-विदेश के सैंकड़ों साधर्मियों ने उपस्थित होकर लाभ लिया। कार्यक्रम में संयमजी शास्त्री, अमनजी शास्त्री, समकितजी शास्त्री एवं प्रज्ञा जैन देवलाली का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। समस्त कार्यक्रम सर्वोदय अहिंसा के यूट्यूब एवं ज़ूम एप पर प्रसारित किया गया, जिसमें संजयजी शास्त्री जयपुर एवं विनीतजी जैन का तकनीक सहयोग प्राप्त हुआ। **– अध्यक्ष, जयकुमार देवड़िया, तीर्थधाम ज्ञानायतन, नागपुर**

आचार्य कुन्दकुन्द के पदवी आरोहण दिवस पर –

संगोष्ठी सानन्द संपन्न

आचार्य कुन्दकुन्ददेव का आचार्य पदवी आरोहण दिवस वीर कुन्दकुन्द कहान जैन यूथ एसोसिएशन, नैरोबी और सर्वोदय अहिंसा, जयपुर द्वारा दिनांक 10 जनवरी को संयुक्त रूप से मनाया गया।

इस अवसर पर आचार्य कुन्दकुन्ददेव के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व को केंद्र में रखते हुए एक ऑनलाइन संगोष्ठी आयोजित की गई। इस संगोष्ठी में श्री प्रकाशभाई शाह कोलकाता, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर एवं डॉ. मनीष जी शास्त्री मेरठ ने अपने विचार व्यक्त किये। संगोष्ठी के मध्य और अंत में पण्डित सुनीलजी शास्त्री राजकोट द्वारा आचार्य कुन्दकुन्द के जीवन पर आधारित सुंदर भक्ति प्रस्तुत की गई। संगोष्ठी के प्रारम्भ में एक लघु फ़िल्म दिखाई गई, जिसमें नैरोबी, केन्या के नन्हे बच्चों ने आचार्य कुन्दकुन्द के जीवन के संबंध में जानकारी दी।

संगोष्ठी का संचालन कोमल शाह नैरोबी और अंकुर शास्त्री भोपाल द्वारा किया गया। संगोष्ठी का ज़ूम एवं यूट्यूब के माध्यम से देश-विदेश के सैंकड़ों श्रोताओं ने लाभ लिया। इस दौरान पण्डित संजयजी शास्त्री जयपुर एवं पण्डित विनीतजी शास्त्री हटा का विशेष तकनीकी सहयोग प्राप्त हुआ।

अन्तर्राष्ट्रीय युवा शिविर संपन्न

देवलाली-नासिक (महा.) : यहाँ पूज्य श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट के तत्त्वावधान में ऑनलाइन 8वाँ अन्तर्राष्ट्रीय युवा शिविर दिनांक 29 से 31 दिसम्बर तक रत्नत्रय मण्डल विधानपूर्वक संपन्न हुआ।

इस अवसर पर गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचन के अतिरिक्त दोनों समय पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर एवं दोपहर में पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री मुम्बई द्वारा प्रवचनों का लाभ मिला। दिनांक 31 दिसम्बर को रात्रि में 11.30 से 12.15 तक विशेष आध्यात्मिक भक्ति का आयोजन हुआ।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित समकितजी शास्त्री गुना एवं पण्डित उर्विषजी शास्त्री देवलाली द्वारा संपन्न हुये। कार्यक्रम का निर्देशन पण्डित देवांगजी गाला मुम्बई द्वारा किया गया।

संस्थापक सम्पादक :
अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल

सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा**
एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.

सह-सम्पादक : **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**

प्रकाशक व मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur67@gmail.com

प्रकाशन तिथि : 13 जनवरी 2021

प्रति,